Patrika, 13th April 2017, Page – 02

स्टार्टअप 'स्वाहा'...

कचरा मुक्ति के लिए आईआईटी में हवनकुंड

आईआईटी एलुमनी ने शुरू किया है स्टार्टअप, एक घंटे में प्रोसेस होगा 400 किलो कचरा

पत्रिका सोशल प्राइड

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क

patrika.com

इंदौर. कचरा निपटान की समस्या शहर के सामने बड़ी चुनौती बनती जा रही है। इसी चुनौती से निपटने के लिए आईआईटी पासआउट छात्रों ने स्टार्टअप 'स्वाहा' शुरू किया है। इसके तहत पहला मॉडल 'हवनकुंड' आईआईटी इंदौर में इंस्टॉल किया गया है। हवनकुंड के जरिए सिर्फ एक घंटे में 400 किलोग्राम कचरा प्रोसेस हो सकेगा। आईआईटी के गौरव गुप्ता ने मल्टीनेशनल कंपनी में नौकरी का विकल्प छोड़कर कचरा निपटान के लिए स्वाहा रिसोर्स मैनेजमेंट प्रालि की शुरुआत की है। बुधवार को आईआईटी इंदौर में उन्होंने हवनकुंड का डेमो देते हुए मशीन इंस्टॉल की। इस दौरान आईआईटी डायरेक्टर प्रो. प्रदीप माथुर सहित फैकल्टी व आईआईटीयन मौजूद थे। हवनकुंड की तकनीक और डिजाइन गौरव ने ही तैयार की है। मोबाइल यूनिट होने के कारण इसे कहीं भी आसानी से लाया और ले जाया सकता है। इससे प्रोसेस होने वाले कचरे को कुछ ही दिनों में अच्छी खाद के रूप में इस्तेमाल किया जा सकेगा। कचरा निपटान का ये तरीका बिजनेस मॉडल के तौर पर भी सफल माना जा रहा दरअसल, कचरे से बनने वा खाद के लिए स्वाहा ने पॉ निर्धारित किए हैं। इन पॉइंट बदले स्वाहा से रिसाइकल पे डस्टबिन आदि लिए जा सकते

30 दिन में होने लगेगी कमाई

गौरव ने बताया कि गीले और सूखे कचरे के निपटाने के लिए अलग-अलग प्रक्रिया अपनाई जाती है। ये प्रोजेक्ट टाउनशिप और इंडस्ट्री के लिए भी डिजाइन किया जा सकता है। मशीन में कचरे को कम्पोज करने के लिए बारीक पीसा जाता है। बाद में इसमें भूसा और बैक्टेरिया मिलाकर 12 से 15 दिन रखा जाता है। इससे अच्छी खाद बन जाएगी। कचरा बढ़ने पर इतनी खाद मिलने लगेगी जिसे आसानी से बेच सकेंगे। सामान्य तौर पर 30 दिन की प्रोसेस में मिलने वाली खाद को बेचकर इसके इंस्टॉलेशन के खर्च के बराबर कमाई हो सकती है।